E. STUDY MATERIAL
FOR - B.A. PART - I

BY - DR. RAKESH KUMAR SINGH
G.D. COLLEGE - BAGAHA
Mob - 9576936617

Q. ईश्वर सिद्धान्त के रूप में निमित्तोपादानेश्वरवाद (Panentheism) की समीक्षात्मक व्याख्या।

Ans. - ईश्वरीय सिद्धान्त के रूप में निमित्तोपादानेश्वरवाद को अंग्रेजी में 'Panentheism' कहते हैं। Panentheism शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम जर्मन दार्शनिक (Friedrich Krause) फ्रेडरिक क्राउसे ने किया था। इसका अर्थ होता है - Pan = all, en = in, theos = God अर्थात All is in God अर्थात सारा विश्व ईश्वर में निहित है। यह विश्व ईश्वर के बराबर नहीं कहा जा सकता। ईश्वर विश्व तो है ही, इसके अतिरिक्त कुछ और भी है।

निमित्तोपादानेश्वरवाद के अनुसार ईश्वर ही परमार्थ है। यह ईश्वर एक, अनन्त, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान तथा व्यक्तित्व रहित है। ईश्वर विश्व के रचयिता, पालक और रक्षक है। विश्व अपनी उत्पत्ति, रक्षा तथा अपने अस्तित्व के लिए ईश्वर पर आश्रित है। ईश्वर विश्व का निमित्त और उपादान दोनों कारण है। निमित्त कारण होने से वह विश्वातीत है अर्थात कार्य (विश्व) से अलग रहता है जैसे कुम्हार घड़े से। उपादान कारण होने से वह विश्वव्यापी है अर्थात कार्य (विश्व) में व्याप्त रहता है जैसे मिट्टी घड़े जैसी चीजों का उपादान कारण होने से उनमें व्याप्त रहती है। ईश्वर विश्व का उपादान कारण है क्योंकि विश्व उसी की अभिव्यक्ति है, विश्व में वही उद्भासित हो रहा है अर्थात विश्व का मूल द्रव्य वही है। वह निमित्त कारण भी है क्योंकि अभिव्यक्तिकरण उसी की क्रियाशीलता का परिणाम है। किसी दूसरी सत्ता से

ईश्वर सिद्धान्त के रूप में निमित्तोपादानेश्वरवाद

प्रभावित होकर नहीं बल्कि अपने आप वह अपने को विश्व के रूप में व्यक्त करता है।

इस सिद्धान्त के अनुसार जड़ और चेतन दोनों ईश्वर पर आश्रित हैं। दोनों में किसी का भी स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं है। जड़ में इच्छा स्वातंत्र्य का पूर्ण अभाव है। चेतन जड़ की अपेक्षा ईश्वर की अधिक पूर्ण अभिव्यक्ति है। इसलिए चेतन प्राणियों में इच्छा स्वातंत्र्य पाया जाता है। जड़ ईश्वर को अत्यन्त अपूर्ण एवं अस्पष्ट रूप से अभिव्यक्त करता है, इसलिए इसमें इच्छा-स्वातंत्र्य नहीं पाया जाता।

इस सिद्धान्त के अनुसार ईश्वर विश्व के अनिवार्य है क्योंकि विश्व का उत्पादक, शासक, रक्षक एवं संहारक भी ईश्वर ही है। अतः ईश्वर के अभाव में विश्व की कल्पना नहीं की जा सकती है। ईश्वर के लिए विश्व आवश्यक है या नहीं? इस प्रश्न को लेकर इसके समर्थकों में मतभेद पाया जाता है। अधिकांश समर्थक ईश्वर के लिए विश्व को आवश्यक नहीं मानते क्योंकि ईश्वर सर्वांगपूर्ण एवं पूर्ण स्वतन्त्र है। कुछ समर्थकों की राय है कि ईश्वर और विश्व दोनों एक दूसरे के लिए अनिवार्य है क्योंकि ईश्वर अपने को विश्व के माध्यम से ही अभिव्यक्त कर सकता है अतः उसके लिए विश्व अनिवार्य है।

इस सिद्धान्त के अनुसार ईश्वर ने विश्व की रचना किसी कालविशेष में नहीं की है। ईश्वर द्वारा विश्व की रचना कब हुई इसके विषय में समय निर्धारित नहीं किया जा सकता। इस अर्थ में यह मत विकासवाद के विरुद्ध नजर आता है।

निमित्तोपादानेश्वरवाद के समर्थकों में पाश्चात्य दार्शनिक हीगेल, बर्गसाँ तथा भारतीय दार्शनिक शंकर प्रमुख है।

हीगेल :- इनके अनुसार पूर्ण प्रत्यय मूलतत्व आत्म चेतन है। वह इसे ईश्वर कहते हैं जो विश्वव्यापी, विश्वातीत तथा व्यक्तित्वरहित है। अतः ईश्वर और विश्व दोनों एक दूसरे